डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

Topic - बिहार में सूफीवाद (Sufism) और उसका प्रभाव
Sufism and its impact on Bihar.

प्रस्तावना :

सूफीवाद (तसव्वुफ) इस्लाम का एक आध्यात्मिक और रहस्यवादी पक्ष है, जिसका मूल उद्देश्य ईश्वर (अल्लाह) से प्रत्यक्ष, प्रेममय और आत्मिक संबंध स्थापित करना है। सूफी संत बाह्य कर्मकांड की अपेक्षा आंतरिक शुद्धि, प्रेम, सेवा, सहिष्णुता और मानवता पर बल देते थे। मध्यकालीन भारत में सूफी संतों ने न केवल धार्मिक क्षेत्र में बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में भी गहरा प्रभाव डाला। बिहार, जो प्राचीन काल से ही बौद्ध, जैन और वैदिक परंपराओं का केंद्र रहा, मध्यकाल में सूफी गतिविधियों का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बना।

बिहार में सूफीवाद का प्रसार मुख्यतः दिल्ली सल्तनत और मुगल काल के दौरान हुआ। यहाँ सूफी संतों की खानकाहें (आश्रम), दरगाहें और मजारें सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक समन्वय के केंद्र बने।

1. सूफीवाद की अवधारणा और सिद्धांत :

सूफीवाद की उत्पत्ति 8वीं–9वीं शताब्दी में पश्चिम एशिया में हुई। इसके प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

तौहीद (एकेश्वरवाद) – ईश्वर की एकता में विश्वास,

इश्क-ए-हकीकी (ईश्वर से प्रेम),

फना और बका – आत्मा का ईश्वर में लय होना,

जिक्र और समा – ईश्वर स्मरण और संगीत के माध्यम से आध्यात्मिक अनुभव,

मानव सेवा – "खिदमत-ए-खल्क" (मानवता की सेवा)।

सूफी संतों ने कठोर शरियतवाद के स्थान पर उदार और प्रेमपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया, जिससे वे आम जनता के बीच लोकप्रिय हुए।

2. भारत में सूफी सिलसिले और बिहार :

भारत में सूफीवाद विभिन्न सिलसिलों (Orders) के माध्यम से फैला। बिहार में मुख्यतः निम्न सिलसिलों का प्रभाव रहा—

(क) चिश्ती सिलसिला :

यह भारत का सबसे लोकप्रिय सूफी संप्रदाय था। प्रेम, सहिष्णुता और लोकभाषा के प्रयोग पर बल देता था।

(ख) सुहरावर्दी सिलसिला :

यह सिलसिला अपेक्षाकृत शासकों के निकट था और प्रशासनिक तंत्र से संवाद रखता था।

(ग) कादिरी सिलसिला :

यह सिलसिला मुगल काल में अधिक सक्रिय रहा और आध्यात्मिक अनुशासन पर बल देता था।

3. बिहार में प्रमुख सूफी संत :

---
(1) शर्फुद्दीन याह्या मनेरी (मखदूम-ए-जहाँ)

बिहार के सबसे प्रसिद्ध सूफी संतों में इनका नाम अग्रणी है।
जन्म: 13वीं शताब्दी
स्थान: मनेर (पटना के निकट)
संबंध: सुहरावर्दी सिलसिला
रचनाएँ: मकतूबात-ए-सादी (पत्र साहित्य)
इनकी शिक्षाओं में आत्मशुद्धि, तपस्या और ईश्वर प्रेम प्रमुख थे। मनेर स्थित इनकी दरगाह आज भी आस्था का केंद्र है।

(2) अहमद याह्या मनेरी :

इन्हें "मखदूम-ए-मुल्क" कहा जाता है।
इन्होंने बिहार में सूफी विचारधारा को संस्थागत रूप दिया।
इनकी खानकाहें शिक्षा और सामाजिक सहायता का केंद्र बनीं।

(3) शाह दौलत मनेरी :

इनकी दरगाह मनेर में स्थित है, जिसे मुगल काल में विशेष संरक्षण मिला।
स्थापत्य की दृष्टि से यह दरगाह बिहार की महत्वपूर्ण इमारतों में से है।

(4) शेख शरफुद्दीन अबू तवामा :

इनका प्रभाव बिहार-बंगाल क्षेत्र में रहा।
इन्होंने शिक्षा के प्रसार में योगदान दिया।
बिहार में इस्लामी शिक्षा संस्थानों की स्थापना में भूमिका निभाई।

4. बिहार में सूफी केंद्र (खानकाह और दरगाह)

(क) मनेर शरीफ दरगाह
यह बिहार का प्रमुख सूफी तीर्थ है। यहाँ हर वर्ष उर्स (मेला) आयोजित होता है।

(ख) बिहार शरीफ
मध्यकाल में यह सूफी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था।

(ग) फुलवारी शरीफ
यहाँ कई सूफी संतों की खानकाहें स्थापित थीं।

5. सामाजिक प्रभाव :
---
(1) सामाजिक समरसता :

सूफी संतों ने जाति-भेद और ऊँच-नीच का विरोध किया। उनकी दरगाहों पर हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय समान रूप से आते थे।

(2) दलित और वंचित वर्ग पर प्रभाव :

सूफी संतों ने दलितों और पिछड़े वर्गों को आध्यात्मिक समानता का संदेश दिया। इससे सामाजिक गतिशीलता को बल मिला।

(3) स्त्री की स्थिति :

सूफी विचारधारा में स्त्री को आध्यात्मिक रूप से समान माना गया। हालांकि व्यावहारिक स्तर पर सीमाएँ थीं, फिर भी यह दृष्टिकोण अपेक्षाकृत उदार था।

6. सांस्कृतिक प्रभाव :
---
(1) भाषा और साहित्य :

सूफी संतों ने फारसी और स्थानीय भाषाओं (अवधी, भोजपुरी) में रचनाएँ कीं।
इससे लोकभाषा का विकास हुआ।
पत्र साहित्य (मकतूबात) ने धार्मिक विचारों को लोकप्रिय बनाया।

(2) संगीत और कला :

समा और कव्वाली की परंपरा का विकास हुआ।
सूफी दरगाहें संगीत और काव्य के केंद्र बनीं।

(3) स्थापत्य कला :

मनेर और बिहार शरीफ की दरगाहें मुगल स्थापत्य शैली का सुंदर उदाहरण हैं।
गुंबद, मेहराब और नक्काशीदार सजावट इसकी विशेषताएँ हैं।

7. राजनीतिक प्रभाव :
---
(1) शासकों के साथ संबंध
दिल्ली सल्तनत और मुगल शासक सूफी संतों का सम्मान करते थे।
फिरोज शाह तुगलक ने सूफी संस्थानों को संरक्षण दिया।
अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया, जिससे सूफीवाद को अनुकूल वातावरण मिला।

(2) प्रशासनिक प्रभाव
सूफी संतों ने शासकों को नैतिक मार्गदर्शन दिया।
उनकी खानकाहें सामाजिक स्थिरता का माध्यम बनीं।

8. आर्थिक प्रभाव :

खानकाहों को भूमि अनुदान (वक्फ) मिलता था।
दरगाहों के आसपास बाजार और मेले विकसित हुए।
उर्स के अवसर पर स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिला।

9. हिंदू–मुस्लिम समन्वय :

सूफीवाद ने बिहार में सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया को तेज किया।
भक्ति आंदोलन और सूफी आंदोलन में समानताएँ थीं—प्रेम, भक्ति और ईश्वर से प्रत्यक्ष संबंध।
इससे गंगा-जमुनी तहज़ीब का विकास हुआ।

10. सीमाएँ और आलोचनाएँ :

सूफी संस्थान धीरे-धीरे रूढ़िवादी हो गए।
कुछ खानकाहें आर्थिक रूप से शक्तिशाली होकर सत्ता से जुड़ गईं।
सामाजिक परिवर्तन सीमित स्तर तक ही संभव हो सका।

11. समकालीन बिहार में सूफी विरासत :

आज भी मनेर शरीफ और फुलवारी शरीफ जैसे केंद्र धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं।
उर्स और मेलों में सभी समुदायों की भागीदारी सामाजिक सद्भाव का प्रमाण है।

निष्कर्ष :

बिहार में सूफीवाद ने मध्यकालीन समाज को गहराई से प्रभावित किया। इसने धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा दिया। सूफी संतों की शिक्षाएँ प्रेम, मानवता और आध्यात्मिक समानता पर आधारित थीं।
हालाँकि सूफीवाद सामाजिक संरचना को पूरी तरह बदल नहीं सका, परंतु इसने मध्यकालीन बिहार में एक उदार और मानवीय वातावरण निर्मित किया।
इस प्रकार, बिहार के इतिहास में सूफी आंदोलन केवल एक धार्मिक धारा नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्संरचना की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया थी, जिसका प्रभाव आज भी दृष्टिगोचर होता है।